रास का वर्णन जिस भागवत में है वो शुकदेव ने राजा परीक्षित को बताया था। एक बार राजा परीक्षित जंगल में शिकार करने गये थे। उनको प्यास लगी थी। वहा एक कुटी के सामने शमिक ऋषि समाधि में बैठे थे। समाधि में इंद्रियां काम नही करती। इसलिए जब परीक्षित ने उनसे पानी मांगा तो उनको नही सुनाई दिया। परीक्षित को गुस्सा आया और उन्होंने ऋषि के गले में पास ही में पडा मरा हुआ साप डाल दिया। शमिक ऋषि का पुत्र शृंगी ऋषि जब बाहर से आये तो उन्होंने अपने तपोबल से जान लिया कि ये काम राजा का है और परीक्षित को शाप दिया कि सात दिन में उसकी मृत्यु साप के काटने से होगी। शमिक ऋषि को समाधि खुलने के बाद इस घटना क्रम की जानकारी हुई। उन्होने शृंगी ऋषि से कहा इतनी छोटी गलती के लिए इतना बडा दंड नही देना चाहिये था।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

परीक्षित को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने शुकदेव से सात दिन में कल्याण का मार्ग पूछा तब शुकदेव ने परीक्षित को भागवत सुनाया था। शुकदेव के बारे में बाद में विस्तार पूर्वक बताया जाएगा।

तो जब शुकदेव ने परीक्षित को ये बताया कि कुछ गोपियाँ श्रीकृष्ण से जार भाव से प्यार करती थी। जार भाव उसे कहते है जब कोई स्त्री घर में पति होते हुए भी परपुरूष से चोरी चोरी प्यार करती है। जो शादीसुदा गोपियाँ थी वो श्रीकृष्ण से इसी भाव से प्यार करती थी। उनके लिए शुकदेव ने कहा कि कहाँ व्याभिचारी दुष्टा गोपियाँ और कहाँ ब्रम्ह श्रीकृष्ण - कोई तुलना ही नही हो सकती - लेकिन इन गोपियों की चरण धूली छोटे मोटे की बात छोडो ब्रम्हा, विष्णु, शंकर चाहते है।

जार प्रेम की बात सुनते ही परीक्षित का माथा ठनका। उन्होने शुकदेव से पूछा कि इसका मतलब गोपियाँ श्रीकृष्ण को परपुरूष समझकर प्यार करती थी। वो श्रीकृष्ण को भगवान नही

जानती थी। फिर उनका उद्धार कैसे हुआ? उनको तो नरक मिलना चाहिये था। उनको गोलोक कैसे मिला?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132